आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2730 • उदयपुर, गुरुवार 16 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

पृथ्वीपुर, निवाड़ी (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 5जून 2022 को कृषि उपज मण्डी पृथ्वीपुर निवाड़ी, (मध्यप्रदेश) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता भारतीय, अधिकार संस्थान ट्रस्ट पृथ्वीपुर निवाड़ी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 28, कृत्रिम अंग वितरण 19, कैलिपर वितरण 09 की सेवा हुई। श्री नरेश जी वैश्णव (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीश जी हिन्डोनिया (सहायक) ने भी सेवायें दी।

नारायण सेवा ने दिव्यांग नरेन्द्र को भेंट की मोटराइज्ड व्हीलचेयर

जिन्दगी, उम्र और हालात किस मोड़ पर कब कैसी करवट ले, कोई नहीं जानता। सब कुछ बदल जाता है, सिर्फ कुछ ही पलों में। मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिला के जमुड़ी कस्बे के नरेन्द्र रौतेल (32) के साथ वक्त ने कुछ ऐसा ही किया कि रफ्तार से चल रही जिन्दगी को ब्रेक लग गया, ट्रेन के पहियों ने उसके दोनों पैर उससे छीन लिए।

नरेन्द्र 2016 में उड़ीसा के रेडाखोल में एक कंट्रक्शन कम्पनी में सुपरवाईजर का काम करता था। नोटबंदी के दौरान वह घर पर पैसे भेजने के लिए ट्रेन से बैंक के लिए निकला। बामूर रेल्वे स्टेशन से थोड़ा पहले सिगनल न मिलने से ट्रेन रुकी हुई थी। पैसा भेजकर कार्यस्थल पर जल्दी पहुंचने में वह ट्रेन से वहीं उतर ही रहा था कि ट्रेन चल पड़ी। नरेन्द्र के दोनों पांव पहियों की चपेट में आ गये। इलाज के दौरान दोनों पैर घुटने के नीचे से काटने पड़े। भुवनेश्वर दिल्ली और मध्यप्रदेश में दो वर्ष तक इलाज और मदद के लिए चक्कर लगाये पर सब जगह निराशा ही मिली। इसी दौरान भाई की मौत, भाभी का अन्यत्र चले जाना और खुद की दिव्यांगता दिन ब दिन घर की दयनीय दशा का कारण बनती जा रही थी। तभी उसे नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। वह 2019 में पहली बार संस्थान में आया जहां संस्थान की निदेशक वंदना जी अग्रवाल और प्रास्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक प्रमुख डॉ. मानस रंजन जी साहू ने हौसला दिया। कृत्रिम पांव लगाए, चलने की ट्रेनिंग दी साथ ही उसे कम्प्यूटर चलाने का प्रशिक्षण भी दिया गया। 6 मार्च 2022 को संस्थान में सिलाई सीख रही सकलांग नीलवती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ।

कुछ दिन पहले नरेन्द्र ने संस्थान से अनुरोध किया कि पति–पत्नी संयुक्त व्यापार शुरू कर परिवार के 8 जनों का भरण पोषण करना चाहते हैं। इसके लिए उसे अपने गांव से 2–3 किलोमीटर रोजाना आना जाना होगा और इतनी दूरी कृत्रिम अंग के सहारे तय करना दूभर है। संस्थान ने दिव्यांग एवं निर्धन नरेन्द्र के परिवार को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए सोमवार को करीब एक लाख लागत की बेट्री ऑपरेटेड मोटराईज्ड व्हीलचेयर निःशुल्क भेंट की। जो सड़क और घर दोनों जगह काम आ सकती है। मदद पाकर नीलवती और नरेन्द्र मुस्कुरा उठे।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 19 जून, 2022

▪ मंगलम पोलो ग्राउण्ड के सामने, कोर्ट रोड, शिवपुरी मध्यप्रदेश

▪ गीता आश्रम, हनुमान चौराहा, जैसलमेर, राजस्थान

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

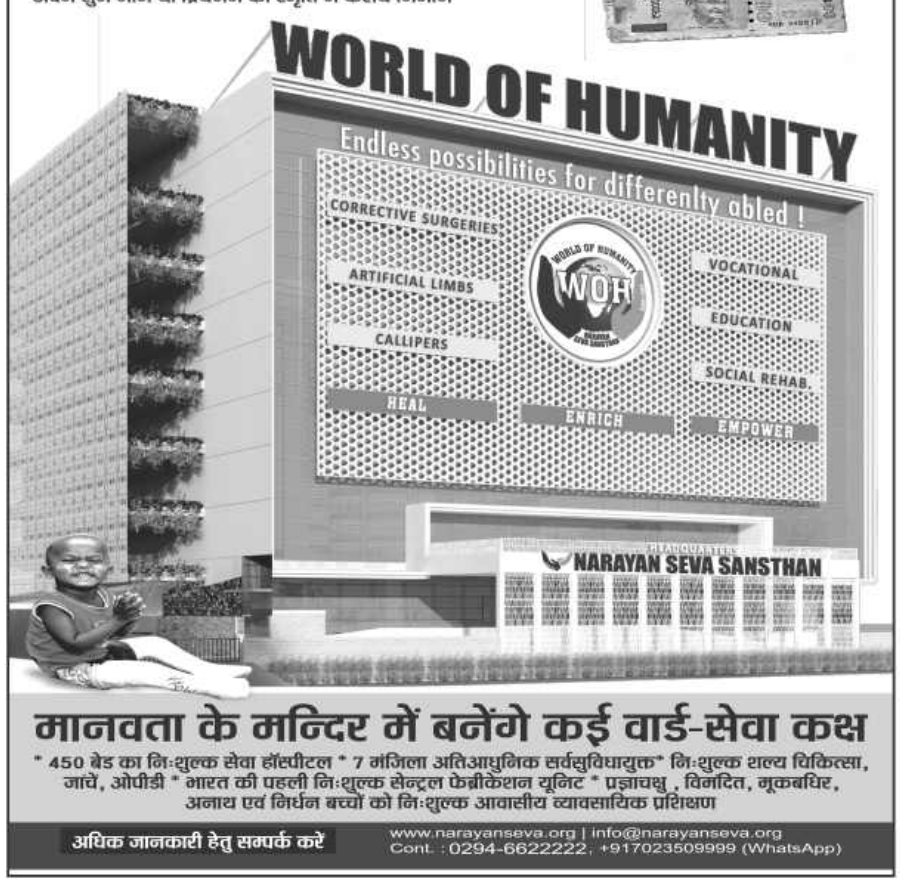

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
" 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल " 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त" निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी " भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट " प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

सबसे बड़ी तपस्या

नर सेवा ही नारायण सेवा है। मानव सेवा से बड़ी न कोई तपस्या है न ही धर्म। जरूरतमंदों व पीड़ितों की सेवा से ही ईश्वर प्रसन्न होते हैं। यदि मार्ग में ऐसा कोइ भी दुःखी–पीड़ित जन मिले तो ठहर कर उसकी यथा योग्य सेवा अवश्य करें।

सत्यनगर का राजा सत्यप्रतापसिंह अत्यंत न्यायप्रिय शासक था। एक बार उसे पता चला कि सौम्यदेव नामक एक ऋषि अनेक सालों से लोहे का एक डंडा जमीन में गाड़कर तपस्या कर रहे हैं और उनके तप के प्रभाव से डंडे में कुछ अंकुर फूट कर फूल–पत्ते निकल रहे हैं और जब वह अपनी तपस्या में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेंगे तो उनका डंडा फूल–पत्तों से भर जाएगा। सत्यप्रताप नेसोचा कि यदि उनके तप में इतना बल है कि लोहे के डंडे में भी अंकुर फूट कर फूल–पत्ते निकल सकते हैं तो फिर मैं भी क्यों न तप करके अपना जीवन सार्थक बनाऊं। यह सोच करवह ऋषि के समीप लोहे का डंडा गाड़कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों की मौसम की परवाह न कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों ही बारिश की परवाह न कर तपस्या में मगन रहे। कुछ देर बाद एक व्यक्ति बुरी तरह भीगा हुआ ठंड से कांपता आया। उसने ऋषि से ठहरने की जगह के बारे में पूछा पर ऋषि ने आंख खोलकर भी नहीं देखा। निराश होकर वह राजा सत्यप्रताप के पास पहुंचा और गिर पड़ा। राजा ने उसकी इतनी बुरी हालत देखकर उसे उठाया। नजदीक ही एक कुटिया नजर आई। उसने उस व्यक्ति को कुटियां मे लिटाया और उसके समीप आग जलाकर गर्माहट पैदा की। गर्माहट मिलने से व्यक्ति होश में आ गया। इसके बाद राजा ने इसके बाद राजा ने कुछ जड़ी–बुटी पीसकर पिलाई। कुछ ही देर बाद वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया। सुबह होने पर राजा जब उस व्यक्ति के साथ कुटिया से बाहर आया तो यह देखकर हैरान रह गया जो लोहे का डंडा उसने गाड़ा था। वह ताजे फूल–पत्तों से भरकर झुक गया। इसके बाद राजा ने ऋषि के डंडे की ओर देखा। ऋषि के लौहे दण्ड में थोड़े बहुत निकले फूल–पत्ते भी मुरझा गए थे। राजा समझ गया कि मानव सेवा से बड़ी तपस्या कोई और नहीं। वह अपने राज्य में वापस लौट गया और प्रजा का समुचित देखभाल करने लगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बाबू ये जीवन की कथा। ये रामेश्वरधाम की कथा, ये सेतु की कथा और पार ब्रह्म परमात्मा समुद्र के उस पार पधार गये। बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय। और देखा सुबेल नाम का एक पर्वत था समतल पर्वत उस पर लक्ष्मणजी ने कुछ पुश्प बिछा दिये, कुछ फूलों के पत्ते बिछा दिये।

सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा।
सकल कपिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा।
खाहु जाइ फल मूल सुहाए।
सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए।।
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

कथा जो विश को अमृत बना दे, जो दुश्मन को मित्र बना दे, जो घृणा को प्रेम में बदल दे। ये राग और ईर्श्या हमारे मित्र नहीं है, ये द्वेश हमारा मित्र नहीं है। ये लोभ– लालच पाप बाप है। इसको दूर रखने की कथा। ये प्रेम को बढ़ाने की कथा। पार ब्रह्म परमात्मा सुबेल पर्वत पर बिराज गये। हुनमानजी बिराज गये। अगंदजी बेठे है, सुग्रीवजी बेठे है और भगवान ने देखा कि बहूत दूर कहीं बिजली चमक रही है। उन्होंने कहा– ये तो बिजली बहुत चमक रही है। तो विभीशणजी हाथ जोड़कर बोले– प्रभु ये रावण का रंगमहल है। इसमें मंदोदरी के हीरो के कुण्डल वो जब बजते हैं, हिलते हैं यूं लगता है जैसे बिजली कौंध रही है। ये मंदोदरी के कानो के कुण्डल हैं और रावण का मुकुट भी चमचमा रहा है। भगवान मुस्करा दिये। मुस्कराते हुए अपना धनुश उठाया एक तरकश से तीर निकाला और एक बाण छोड़ा, मुकुट भी नीचे, छत्र भी नीचे और मंदोदरी के कानो के कुण्डल भी नीचे। और मंदोदरी ने बहुत समझाया था कि–रावणजी मेरे पतीदेव, राम विश्णु भगवान के अवतार हैं। ये वो ही जिन्होंने हिरण्याकश्यप का वध किया। कभी इन्होंने नृसिंह भगवान का रूप धारण किया थ। नृसिंह भगवान का अवतार लिया था। ये वो ही कभी हिरण्यकाक्ष का अंत करने के लिये वराह का अवतार लिया था। ये प्रभु वो ही है, आप इनसे बैर मत कीजिये। बहुत समझाया।

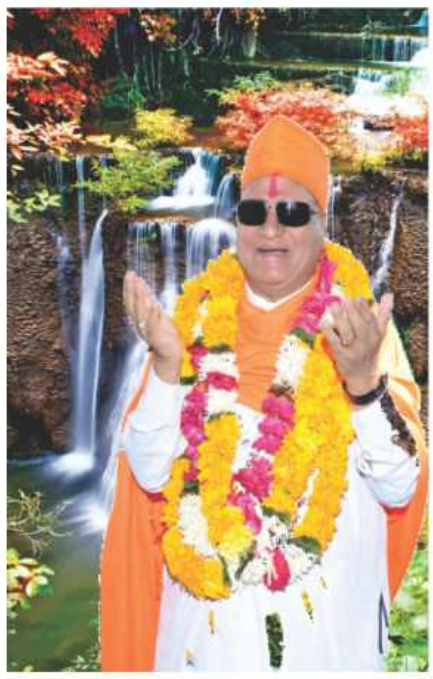

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

मनोहर के परिवार को मिला सहारा

मैं मनोहर लाल मीणा 38 साल अपने 4 बच्चों व पत्नी के साथ उदयपुर की सरू पंचायत में रहता हूं। तीन साल पहले पास के स्कूल में बिजली ठीक करने गया था। अचानक करंट लगने से कमर और रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो गई। अब भी चल–फिर नहीं सकता। कमर के नीचे से पूरी तरह विकलांग हूं, इलाज हेतु 2 लाख में खेत भी बेच दिया, फिर भी ठीक नहीं हुआ।

तीन साल से बिस्तर पर पड़ा हूं। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, इसलिए बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक बच्चा काम पर जाता है, पत्नी–बच्चा मजदूरी करके सबका गुजारा कर रहे हैं। कई बार पास–पड़ोसी खाना दे जाते हैं। मेरी स्थिति की जानकारी नारायण सेवा संस्थान को सरपंच और पड़ोसियों ने दी। संस्थान ने हमें एक माह की राशन सामग्री (जिसमें आटा, दाल,नमक–मसाले, तेल, शक्कर, चायपत्ती) आदि की मदद की। हमें बहुत राहत मिली। इलाज का आश्वासन भी दिया कि मदद करेंगे। राशन हर माह मिल रहा है।

सम्पादकीय

उत्साह और उमंग हृदय के भावों का दिखता हुआ बिम्ब होते हैं। मनुष्य के हृदय में जो भाव पैदा होते हैं वे प्रकट होने के लिये उसकी क्रियाओं का, हावभाव का, अभिव्यक्ति का सहारा लेते हैं। पर हम आज सभ्यता के झूठे चक्कर में दिल के भावों का प्रकट होने का अवसर देने में कोताही करते हैं।

आज हमारे जीवन की विडम्बना यह है कि हम रोने के प्रसंगों पर रो नहीं पाते और हँसने के मौकों पर हँस नहीं पाते। हम हँसने या रोने से पहले यह विचार करने लग जाते हैं कि हमारे हँसने और रोने पर लोग क्या सोचेंगे ? लोगों की सोच के चक्कर में हम अपने भावों को दबाने में ही रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अभिव्यक्ति के दमन से असहनता और .त्रिमता बढ़ती जाती है। इसे मिटाने के लिये हमें अपने मनोभावों को दबाने के बजाय उचित तरीके से प्रकट करने का आभास बनायेंगे तो हम सहज जी सकेंगे।

कुछ काव्यमय

मन के भावों की अभिव्यक्ति,
करते रहो सदा निर्बाध।
वरना खोने लग जायेगा,
जीवन का वह मीठा स्वाद।
हँसना, रोना, गाना, नर्तन,
इन्हें बना लें जीवन अंग।
तभी सहजता नैसर्गिकता
चल पायेगी जीवन संग।

अपनों से अपनी बात

सर्व मंगल मांगल्यै

संसार में कुशल समाचार जानने के लिये एक दिन भगवान ने नारद जी को पृथ्वी पर भेजा। उन्हें सबसे पहले एक दीन–दरिद्र पुरुष मिला जो अन्न और वस्त्र के लिये तड़प रहा था। नारद जी को उसने पहचाना और अपनी कष्ट कथा रो–रो कर सुनाने लगा। उसने कहा, जब आप भगवान से मिले तो मेरे गुजारे का प्रबन्ध करवा लेवे। नारद जी भी उसका दुःख देखकर दुःखी हुए बिना नहीं रहे, उदास मन से उन्होंने वहाँ वे विदाई ली और ऐसा आश्वासन दिया कि मैं प्रभु से अवश्य बात करूंगा। तुम्हारे लिये।

एक गाँव में नारद जी की भेंट एक धनाढ्य पुरुष से हुई। उन्होंने भी नारद जी को पहचानने में देर नहीं की पर उनका उलाहना कुछ और ही था। नारद जी ने उनस कुशलक्षेम पूछा तो उस धनवान न खिन्न होकर कहा मुझे भगवान ने कैसे झंझाल में फँसा दिया। थोड़ा मिलता तो मैं शान्ति से रहता और कुछ भजन कर पाता, पर इतनी दौलत तो संभाले नहीं संभलती। ईश्वर से मेरी प्रार्थना करना कि मुझे इस झंझाल से मुक्ति दें। नारद जी को यह विषमता अखरी और पुनः स्वर्गलोक की

ओर प्रस्थान कर गए। भगवान ने नारद जी को उस यात्रा का वृत्तान्त पूछा तो देवर्षि ने दोनों घटनाएँ सुना दी। नारायण हंसे और बोले देवर्षि मैं कर्म के अनुसार ही किसी को कुछ दे सकने में विवश हूँ। जिसकी कर्मठता समाप्त हो चुकी है उसे मैं कहाँ से दूँ। तुम अगली बार जाओ तो उस दीन–हीन से कहना कि दरिद्रता के विरुद्ध लड़े और साधन जुटाने का प्रयत्न करें तभी उसे दैविक सहायता मिल सकेगी। कहा भी है :

उद्यमेव ही सिद्यन्ति,
कार्याणि न मनोरथे
न ही सुप्तस्य
सिंहस्य प्रविशन्ति,
मुखे मृगाः।।

इस प्रकार से धनी महानुभाव से कहना यह दौलत तुझे दूसरों की सहायता के लिये दी गई है। यदि तू संग्रही बना रहा तो झंझाल ही नहीं आगे चलकर वह विपत्ति भी बन जायेगी। इसे तुम स्वयं कम कर सकते हो, इसका सात्विक सदुपयोग करके। असहाय, बीमारों, दुखियों, दरिद्रों एवं निराश्रितों की सेवा में इसे लगाना ही इसका सर्वोत्तम उपयोग है।

क्या हम भी ऐसे झंझाल में फंसे हुए तो नहीं हैं ? क्या हमें रातों की नींद बराबर आ रही है ? क्या हम धन के मात्र चौकीदार बनकर रह गए हैं? क्या हमारे मन की स्थिति भी उस धन महानुभाव के सदृष्य हैं यदि हाँ तो यही है अवसर जागने का, यहीं है अवसर पुण्य कमाने का, यह समय है अपनी धनरूपि लालसा को सम्मानित करने का। अपनी आवश्यकता से अधिक संचित पूँजी को दे डालिये, दिव्यांगों, निराश्रितों, बीमारों, विधवाओं एवं असहायों की सेवा में। आपकी पूँजी मात्र तिजोरी में बंद रह गई है तो किसी के काम नहीं आएगी। और यदि इसका सेवा में उपयोग हो गया तो विकलांग भी अपने पाँवों पर चल कर निराश्रित बाल गोपाल भी समाज में अपना स्थान बना लेंगें, मौत से झुझता हुआ गरीब बीमार भी स्वस्थ होकर आपके कल्याण और सर्वसुख की मंगल कामना प्रभु से करेगा।

–कैलाश 'मानव'

सम्राट कौन

ईश्वर के समक्ष राजा और रंक दोनों ही समान हैं। परन्तु इस धरती पर असली सम्राट कौन है? क्या वह जिसके पास धन–दौलत, ऐश्वर्य–सम्पदा और नौकर–चाकर हैं या वह जो इन सब से सर्वथा मुक्त है एवं अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कर जीने वाला है? एक बार महान् चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस किसी जंगल में रास्ते के किनारे बैठे हुए थे। उसी रास्ते से एक सम्राट अपने सैनिकों के

साथ गुजर रहे थे। सम्राट ने रूककर कन्फ्यूशियस से पूछा , "आप कौन हैं?" कन्फ्यूशियस ने उत्तर दिया, "मैं सम्राट हूँ।" सम्राट आश्चर्यचकित हुए और कन्फ्यूशियस से कहा, "तुम कैसे सम्राट हो सकते हो? सैनिक मेरे साथ हैं, शानो–शौकत मेरे पास है, तो तुम कैसे सम्राट हुए और अगर हो तो साबित करो।" कन्फ्यूशियस ने ध्यानपूर्वक सुनकर उत्तर दिया, "आपको अपने कार्यों को पूर्व करवाने के लिए नौकरों एवं दासों की जरूरत पड़ती है, जबकि मुझे इनकी जरूरत नहीं, क्योंकि मैं अपने काम स्वयं करता हूँ। आपको अपने शत्रुओं से रक्षा हेतु सैनिकों की जरूरत होती है, परन्तु मुझे किसी प्रकार के सैनिकों की जरूरत नहीं, क्योंकि मेरा इस संसार में कोई शत्रु नहीं। आपको अपने जीवन में धन–वैभव, यश– प्रसिद्धि की जरूरत होती है, जबकि मुझे धन–वैभव, यश–प्रसिद्धि किसी की जरूरत नहीं है, क्योंकि मेरी समस्त आवश्यकताएँ समाप्त हो चुकी हैं और जिसकी जरूरतें समाप्त हो जाएँ, उसे किसी की भी आवश्यकता नहीं होती।

आप ही बताइए कि वास्तव में सम्राट कौन है, आप या मैं?"वास्तव में सम्राट वही है, जो स्वयं जीना जानता हो, बिना सहारे के, बिना आवश्यकता के और बिना लोभ–लालच, राग–द्वेष, वैमनस्य के।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

यह सब अत्यंत सरलता से चल रहा था तभी मानो उस पर कहर टूट पड़ा। उसका उदयपुर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना जैसे किसी को नहीं सुहाया हो, उसके ट्रांसफर ऑर्डर आ गये और उसे बांसवाड़ा जाने को कहा गया। उदयपुर में संस्था काम काम काफी फैल गया था, कई प्रकल्प शुरू कर दिये थे जो अभी अधूरी अवस्था में थे, निर्माण कार्य जारी था, बच्चे भी बढ़ गये थे, एक ही विकल्प था कि किसी तरह यह स्थानान्तरण रूकवाया जाये।

कैलाश अपने कार्यों की सभी विवरणिकाएं, फोटो एलबम, अखबारों की कटिंगें वगैरह लेकर विभाग के सर्वोच्च अधिकारी जी.एम.टी. से मिलने गया। जिस व्यक्ति के सम्मान में राज्य का मुख्य सचिव सारे कार्य छोड़ खड़ा हो जाता था उसी व्यक्ति को उसके उच्चाधिकारी ने दो दिन तक मिलने का समय भी नहीं दिया। तीसरे दिन अवसर मिला तो कैलाश ने उनसे गुहार की कि उसे उदयपुर में ही रखा जाय, इसके लिये वह अपनी पदोन्नति भी छोड़ने को तैयार है। कैलाश ने अपने कार्यों के बारे में बताया मगर जी.एस.टी. का मन नहीं पसीजा। उन्होंने कहा कि आप जैसे योग्य एवं कर्मठ व्यक्तियों की बांसवाड़ा में बहुत जरूरत है।

कैलाश के पास अन्य कोई विकल्प भी नहीं था, सारा कार्य कमला के भरोसे छोड़ बांसवाड़ा चला गया। 5 दिन वहां रहता और दो दिन उदयपुर आ जाता। ट्रांसफर करवाने की बहुत कोशिशें की, बड़े–बड़े लोगों से सिफारिशें करवाई मगर जी.एम.टी. अड़े रहे। धीरे–धीरे बांसवाड़ा में भी शिविर लगाने शुरू कर दिये। यहां भी कई लोग जुड़ गये। कैलाश ने इसे ईश्वर के प्रसाद रूप में ही लिया। उदयपुर में कमला, जगदीश आर्य, प्रशान्त, कल्पना की सहायता से सारे कार्य सुचारू रूप से चलाती रही। निर्माण भी मंथर गति से आगे बढ़ता रहा। देखते ही देखते डेढ़ साल गुजर गया, इसके बाद वह शुभ घड़ी आई जब कैलाश का स्थानान्तरण पुनः उदयपुर हो गया। अब वह द्विगुणित उत्साह से सेवा कार्यों में जुट गया। ऐसा लगता था जैसे डेढ़ साल बाहर रहने की क्षतिपूर्ति करना चाह रहा हो।

अंश - 127

नारियल तेल व कपूर की मसाज से दूर होगा डैंड्रफ

डैंड्रफ से परेशान है तो इसके लिए नीम की पत्तियों को उबालकर सिर धो सकते हैं। नींबू के रस के भी इसमें प्रभावी परिणाम है। इसे बालों में सीधे ही या फिर नींबू को पीसकर भी लगा सकते हैं। ऐलावेरा भी डैंड्रफ दूर करने मे कारगार साबित हो सकता है। इसके लिए इसका रस बालों में लगाकर एक घंटे तक रहने दें और फिर एक घंटे बाद ठंडे पानी से बाल धो लें। इसके अलावा नारियल का तेल के साथ कपूर मिलाकर रख लें और नहाने से लगभग आधे घंटे पहले इससे बालों की मसाज करें। ऐसा नियमित करने से राहत मिलेगी।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्डी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

उन्होंने कहा कि आप तो नारायण सेवा के संस्थापक चेयरमेन है। आप एनाटोमी की पुस्तक ? आप डॉक्टर बन रहे हैं क्या? नहीं साहब समझना चाहता हूँ। शरीर में रुचि है– मेरी। मैं तो साइंस और मैथ्स का विद्यार्थी था। मेरे तो कॉलेज में फिजिक्स केमिस्ट्री और मैथ्स रही है। बायोलॉजी नहीं रही है। इसलिए डॉक्टर के क्षेत्र में तो प्रवेश नहीं कर सकता– मैं। बड़े भाई साहब राधेश्याम भाई साहब की इच्छा थी कैलाश को इंजीनियरिंग कॉलेज में भर्ती कराएंगे। और ठाकुर ने जैसी प्रेरणा दी इच्छा थी पुस्तकें पढ़ने की। साहित्य की सेवा की छह–सात साल रिडेक्स सर्विस दुकान खूब पुस्तकें हजारों की संख्या में। फिर पोस्ट ऑफिस फिर टेलीकम्युनिकेशन पिंडवाड़ा की पीड़ा 1976 से 1985 किसना जी भील के आँसूं 1990 के आसपास पहाड़ी से उतर के चारों हाथ पैर से चलता हुआ आया दिव्यांग, और ठाकुर ने इस क्षेत्र में प्रवेश करा दिया। सब प्रभु का है। तो 2001 आप कहेंगे महाराज 1989 की बात जरूर करते हैं– महाराज। अक्टूबर में हाँ, भाई 15 नवंबर के आसपास के जो शिविर हुए। तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।

यह भगवान की कृपा से पदराड़ा, मजा, ढोल, कमोल ये सारे क्षेत्र जैन परिवार विशेष तौर से इसी क्षेत्र से सूरत पहुँचे। और साड़ी का जो व्यापार अधिकतर वह गोगुंदा के जसवंतगढ़ के खाखड़ी और जिन गांवों का शुभ नाम बोल पाया हूँ। मैं उन क्षेत्र में आगे भी इसके आगे के कुछ क्षेत्र और ठाकुर की कृपा से साड़ी का संसार बोम्बे क्लॉथ मार्केट टेक्सटाइल मार्केट ज्यादातर सूरत के टेक्सटाइल मार्केट में मेवाड़ के इस क्षेत्र के महानुभावों की मुख्य भूमिका रही।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 480 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023